# ELECTRONIC INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (EIIRJ)

A Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
SJIF Impact Factor : 6.21 ISSN : 2277-8721
Vol. VIII Special Issue – I, March 2019

# REFLECTION OF EDUCATION IN LITERATURE

## साहित्यातील शिक्षणाचे प्रतिबिंब

■ EDITORIAL BOARD ■

Prin. (Dr.) Arjun Rajage
Rajarshi Shahu Arts & Commerce College, Rukadi

Dr. Girish More
Department of Marathi, Rajarshi Shahu Arts & Commerce College, Rukadi

Dr. Uttam Patil
Department of English, Rajarshi Shahu Arts & Commerce College, Rukadi

Mr. Shankar Dalavi
Department of Hindi Rajarshi Shahu Arts & Commerce College, Rukadi

Dr. S.B. Biradar
Department of English, SVM College, Ilkal (Karnataka)

Dr. Sabiha S. Sayyad
Department of Urdu, Night College of Arts and Science, Ichalkaranji

**RAJARSHI SHAHU ARTS AND COMMERCE COLLEGE, RUKADI**
Tal. Hatkanangale, Dist. Kolhapur 416 118
E-mail: rajshahurkd@yahoo.com, Website: www.rajshasuruk.in

**ELECTRONIC INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (EIIRJ)**

ISSN – 2277-8721
Online and Peer Reviewed Journal
SJIF Impact Factor : 6.21
Vol. VIII Special Issue No. I

**Reflection of Education in Literature**
**साहित्यातील शिक्षणाचे प्रतिबिंब**

In Collaboration with

**Rajarshi Shahu Arts & Commerce College,**
**Rukadi, Tal. Hatkanangale, Dist. Kolhapur**
**e-mail: rajshahurkd@yahoo.com**
**website: www.rajshasuruk.in**

© Principal, Rajarshi Shahu Arts & Commece College, Rukadi

**Editorial Board** :
Prin. (Dr.) Arjun Rajage
Dr. Girish More
Dr. Uttam Patil
Mr. Shankar Dalavi
Dr. S.B. Biradar
Dr. Sabiha Sayyad

**Published by** : Electronic International Interdisciplinary Research Journal (Eiirj)
Mobile No. 9822307164/8355852142

**Printed by** : Shreekant Computers and Publishers,
University Road, Opp. Khare Mangal Karyalaya,
Kolhapur 416 008

**Print** : March 2019

**Editor Disclaimer :** The views expressed in Research papers published in this Journal by the authors are their own and the publisher and editorial board does not accept any legal responsibility regarding plagiarism or inaccuracy for the views of authors.

| Sr. No. | Title | Author | Page No. |
|---|---|---|---|
| 101 | साहित्याची स्त्रीवादी समीक्षा | कु.दिव्यांजलीकुमार माने<br>डॉ. सी.पी.सोनकांबळे | 302 |
| 102 | काटेमुंढरीची शाळा : आदिवासी जीवनाचा डोळस समूहशोध | डॉ.प्रभाकर रामचंद्र पवार | 306 |
| 103 | शंकर पाटलांच्या कथेतील 'शाळा' | प्रा. डॉ. माधवी खरात | 309 |
| 104 | गुरुदेव रवींद्रनाथ टागोर यांचे शैक्षणिक तत्त्वज्ञान | विजया प्रशांत पवार | 312 |
| 105 | मराठी कवितेतील शिक्षणव्यवस्थेचे चित्रण | डॉ. कल्याणी शेजवळ. | 315 |
| 106 | शिक्षण माणसाला सर्वार्थाने संपृक्त बनवते | डॉ. प्रशांत नागावकर | 318 |
| 107 | दलित, वंचित, आदिवासी, भटके-विमुक्त अल्पसंख्याक यांच्या शिक्षणामुळे मराठी साहित्यात उमटलेला आवाज | डॉ. सयाजीराव छबुराव गायकवाड | 321 |
| | **HINDI SECTION** | | |
| 108 | हिंदी साहित्य में चित्रित शिक्षा क्षेत्र में शोषण, उत्पीडन, भ्रष्ट व्यवस्था तथा अनैतिकता | डॉ. बलवंत जेऊरकर | 324 |
| 109 | एक और द्रोणाचार्य में शिक्षण व्यवस्था की कुरूपता | डा. नागरत्ना के | 327 |
| 110 | 'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास में चित्रित शिक्षा की दशा एवं दिशा | श्री. अनिल सदाशिव करेकांबळे<br>प्रा. डी. एस. घुटुकडे | 330 |
| 111 | 'जूठन' में प्रतिबिंबित शिक्षा और वर्तमान | डॉ. सविता चोखोबा किर्ते | 333 |
| 112 | 'नभग' खंडकाव्य में समाज परिवर्तनकारी शिक्षाप्रणाली | प्रा. एस्. आर. दळवी | 336 |
| 113 | हिंदी साहित्य में चित्रित धर्म और शिक्षा के अतः संबन्ध | डॉ.संतोष बबनराव माने | 339 |
| 114 | ''शिक्षा पर हावी होती राजनीति : 'एक और द्रोणाचार्य' के विशेष संदर्भ में'' | प्रा. शैलजा पांडुरंग टिळे | 341 |
| 115 | हिन्दी उपन्यासों में चित्रित शिक्षा के द्वारा महिला सुधार-मुस्लिम महिलाओं के संदर्भ में | डॉ. शाहीन एजाज जमादार | 344 |
| 116 | शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में नारी जीवन के बदलते आयाम (हिंदी कथासाहित्य के विशेष संदर्भ में) | प्रा.सौ.स्नेहलता सदाशिव पुजारी | 347 |
| 117 | हिंदी साहित्य में चित्रित शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार (देवेश ठाकुर जी के 'गुरूकुल' उपन्यास के विशेष संदर्भ में) | डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले | 350 |
| 118 | शिक्षा व्यवस्था के भ्रष्टता का शिकार समर्पित जीवन | शंकर दत्तात्रय कोळगिरे | 352 |
| 119 | हिंदी महिला आत्मकथाओं में चित्रीत नारी शिक्षा | प्रा. माधुरी शिवाजीराव पाटील | 354 |
| 120 | ''ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में शिक्षा से प्राप्त आत्माभिमान'' | प्रा.सुनंदा मोहिते | 356 |
| 121 | 'पहला गिरमिटिया' में शिक्षा से निर्मित मानवी मूल्य | प्रा. डॉ. आर. बी. भुयेकर | 358 |
| 122 | शिक्षा के द्वारा हुआ महिला सुधार एवं सशक्तिकरण (हिंदी उपन्यासों के संदर्भ में) | डॉ.कल्पना किरण पाटोळे | 360 |
| 123 | हिंदी कथा साहित्य में प्रतिबिंबित शैक्षिक प्रशासन व्यवस्था | डॉ. शोभा माणिक पवार | 362 |
| 124 | शिक्षा से प्रभावित सामाजिक आंदोलन और हिंदी दलित आत्मकथा साहित्य | डॉ.साताप्पा शामराव सावंत. | 364 |
| 125 | "हिंदी साहित्य में शिक्षा से प्रभावित पारिवारिक रिश्ते-नाते" (ममता कालिया के 'दौड़' उपन्यास के संदर्भ में) | सुश्री रूपाली संभाजी पाटील | 368 |
| 126 | 'डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के विचारों से प्रेरित शिक्षा' (आधुनिक हिंदी कविता के विशेष संदर्भ में) | सागर रघुनाथ कांबळे | 371 |

# 'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास में चित्रित शिक्षा की दशा एवं दिशा

**श्री. अनिल सदाशिव करेकांबळे**
शोध छात्र, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

**प्रा. डी. एस. घुटुकडे**
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
भा. वि. मातोश्री बयाबाई श्रीपतराव कदम
कन्या महाविद्यालय, कडेगांव-सांगली।

**प्रस्तावना :-**

हिंदी कथा साहित्य में श्रीलाल शुक्ल का नाम विशेष आदर के साथ लिया जाता है। 'राग-दरबारी', 'सूनी घाटी का सूरज', 'बिसामपुर का संत' जैसे चर्चित उपन्यासों के साथ उनकी अधिकांश रचनाओं ने ग्रामीण जीवन का यथार्थ वर्णन आया है। ग्राम्य जीवन में किसान का अभावग्रस्त संघर्षशील जीवन, शिक्षा से बिछड़ते हुए लोग और शिक्षा पाकर भी सामाजिक शोषण का हिस्सा बनते किसान के बच्चों की व्यथा एवं कथा उनके कथा-साहित्य में अंकित हुई है। 'राग दरबारी' उपन्यास शिक्षा व्यवस्था पर करारा व्यंग्य है तो 'सूनी घाटी का सूरज' किसान के बेटे के शिक्षा संघर्ष, उच्च शिक्षित होकर भी समुचित सम्मान न मिलना और वापस सूनी घाटी अर्थात गाँव में वापस लौटने की कथा है। अत: हमने प्रस्तुत संगोष्ठी के लिए शोधालेख हेतु 'श्रीलाल शुक्ल के 'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास का विवेचन किया है।

**'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास में चित्रित शिक्षा की दशा एवं दिशा :**

श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित 'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास १९८७ ई. में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास का सातवाँ संस्करण इसकी लोकप्रियता का प्रमाण है। विवेच्य उपन्यास किसानों के शोषित जीवन, उनके प्रतिभाशाली बच्चों की दुर्दशा का दस्तावेज है। उपन्यास के प्रमुख पात्र रामदास के शिक्षा पाने के संघर्ष यात्रा को सूक्ष्मता से शुक्ल जी ने अंकित किया है। कर्जा लेने के बाद किसान गांव के ठाकुरों के बिनाए जाल में कैसे फंसते हैं और फिर किसान के परिवार की कैसी दुर्दशा होती है? इसका प्रमाण विवेच्य उपन्यास है। रामदास के पिता रामनाथ खुद एक क्षत्रिय परिवार से है लेकिन बड़े ठाकुर की हैसियत में बहुत छोटे है। चार बीगा जमीन और चार बेटियों की शादी का बोझ वे अकेले ढो रहे हैं तब उनके पास बडे ठाकुर से कर्जा लेने के सिवाय विकल्प न था। कर्जा लेकर वे भुगतान के लिए ठाकुर के घर बंधुवा मजदूर बनते हैं। लेकिन वे अपने बेटे रामदास को पढाना चाहते हैं। पंडित जी को गांव से निष्कासित करने से स्कूल बंद पड़ गया है। रामदास का स्कूल बंद होने से गांव के लोग उसे ठाकुर की भैंसे चराने के काम पर लगाने की सलाह देते हैं। पर रामदास पढना चाहता है, स्कूल नहीं जाऊंगा तो मैं पढाई भूल जाऊँगा-"काका। मुझे स्कूल भेज दो। अगर न भेजा तो मुझे गिनती-पहाडे सब भूल जाएँगे।"[१] स्पष्ट है कि रामदास पढना चाहता है लेकिन उसके पिता बेबस है।

पिता की मौत के बाद रामदास बड़े ठाकुर के घर बंधुवा मजदूर बन जाता है। भैंसों को चराना, पानी लाना आदि काम वह करता है। एक दिन हेडमास्टर मुंशी नवरतन लाल रामदास को पढ़ाने के लिए ले जाने के बात कहकर ठाकुर के कर्ज का भुगतान करके उसे अपने घर ले जाते हैं। लेकिन उनका असली मकसद अपने बूढ़े बीमार पिता अमीन साहब की सेवा कराने के लिए नौकर की जरूरत थी। शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे भी चरित्र है जो शिक्षा का लालच दिखाकर गरीब बच्चों को अपने घर का नौकर बनाते हैं। रामदास उनके घर के सारे काम, अमीन साहब की सेवा करके दोपहर ढाई बजे स्कूल जाता है। अमीन साहब से रामदास को घर पर ही अनौपचारिक शिक्षा मिलती है। अमीन साहब को अंग्रेजों ने बनाई शिक्षा पद्धति से एतराज था। वे रामदास को बताते हैं कि-"बेटे स्कूल में काबिलियत घोलकर तो पिला नहीं देते। विद्या तो अपने करने की विद्या है। चोर की तरह स्कूल के एक कोने में बैठे जाने से तो आ नही जाएगी।"[२] वस्तुत: वर्तमान समय में छात्रों की स्थिति ऐसी ही बनी है। वे शिक्षा के नाम पर स्कूल में पढने आते हैं और मौज-मस्ती करके घर लौट जाते हैं। आज की तुलना में हमारी प्राचीन गुरूकुल शिक्षा पद्धति बेहतर थी जो व्यक्ति को श्रम और बुद्धि के समन्वय के स्तर पर सक्षम बनाती थी। इस अंतर को स्पष्ट करते हुए आचार्य विनोबा भावे लिखते हैं-"आज की विचित्र शिक्षण पद्धति के कारण जीवन के दो टुकड़े हो जाते हैं। आज के पहले पंद्रह-बीस वर्षों में आदमी जीने की झंझट में न पड़कर सिर्फ शिक्षा प्राप्त करें और बाद में शिक्षा को बस्ते में लपेटकर मरने तक जिये।"[३] विनोबा जी का यह चिंतन प्रासंगिक है। आज की शिक्षा पद्धति से व्यक्ति की हालत धोबी के कुत्ते की तरह हो गई है, वह न घर का रहता है न घाट का।

रामदास अगली पढ़ाई के लिए बहुत सपने संजोए कानपुर जाता है। वहाँ हेडमास्टर ठाकुर अंबिकेशसिंह उसे संस्कार के नाम पर क्षत्रियता का रौब दिखाते हैं। जहाँ शिक्षा एवं सुविधा देने की बात होनी चाहिए थी वहाँ उसे पैरों को छूकर प्रणाम करने को कहा जाता है। रामदास के लिए वजीफा की बात कहने पर ठाकुर अंबिकेशसिंह सरकार ने वजीफा बंद करने की बात कहते हैं। तब रामदास की ओर से महाराज कहते हैं–''इसके रहने का ठिकाना कर दो। बस यहीं बहुत है। वजीफा देने के दिन गए।''[४] गरीब बच्चों की पढ़ाई के लिए संजीवनी साबित होने वाले छात्रवृत्ति के रूपयों को भी हड़पने के कारण रामदास जैसे बच्चे शिक्षा से दूर हो जाते हैं। रामदास मन लगाकर पढाई करता है तब उसे पांच रुपए सरकारी वजीफा शुरू होता है। उसकी फीस माफ कर दी ग थी। लेकिन बारह आना स्कूल के खेल-कूद आदि की फीस, जो पढाई की फीस माफ करने पर भी देनी पड़ती थी।

शिक्षा जैसे पवित्र मंदिर में राजनीति का प्रवेश बहुत ही चिंताजनक विषय है। आज भारत के अधिकांश विश्वविद्यालयों में छात्रों क: राजनीति हिंसा के चरम को छू चुकी है। शिक्षा क्षेत्रों का राजनीतिकरण या गुटीय बंटवारा ये बड़ी चुनौती आज भारत के सामने बनी हुई है। विवेच्य उपन्यास में भी हेडमास्टर अंबिकेश ठाकुर अपने क्षत्रीय घंमड के कारण प्रिन्सिपल बनने के लिए प्रबंधक के घर पर छात्रों का मोर्चा निकालते हैं, हड़ताल करते हैं। इस दौरान प्रबंधक घर पर पथराव किया जाता है। पुलिस की लाठीचार्ज में बहुत से छात्र घायल हो जाते हैं। कॉलेज दो महीने बंद रखा जाता है। अतः इससे स्पष्ट हो जाता है कि आज कॉलेज का पद पाने के लिए भी कुछ धूर्त लोग छात्रों का [illegible] करके घटिया राजनीति करते हैं।

[illegible] उपन्यास में केवल माध्यमिक, उच्च माध्यमिक शिक्षा की समस्याएँ नहीं बल्कि विश्वविद्यालयीन [illegible] विकृतियों की ओर भी लेखक ने ध्यानाकर्षण किया है। विश्वविद्यालय में प्रोफेसर सिन्हा रामदास की [illegible] का जमकर लाभ उठाते हैं। वे उससे एक अर्थशास्त्र की किताब लिखवाकर लेते हैं और उसे अपना नाम देते हैं। [illegible] ने रामदास की अगली पढाई के लिए जो खर्चा आएगा उसका प्रबंध करने हेतु उसे किताब लिखवाने को कहते हैं लेकिन जब किताब छपकर आती है तब लेखक के रूप में रामदास नहीं बल्कि प्रो. सिन्हा का नाम था। इस धोखे से रामदास भौचक रह जाता है। वह अपनी दोस्त अनिता का को कहता है–''अनिता मैं, सचमुच ही बहुत दुःखी हूँ। मुझे इस बात का भी उतना कष्ट नहीं कि प्रोफेसर सिन्हा ने मेरी लिखी पुस्तक को अपने नाम से प्रकाशित करा लिया। यह बेईमानी है, पर बेईमानी के इस जगद्व्यापी प्रहसन में सिन्हा साहब का पार्ट बड़ा साधारण है।''[५] अतः रामदास का यह आक्रोश शिक्षा आज भारतीय विश्वविद्यालयों में पनप रही अवसरवादिता, प्रतिभाशाली छात्रों के शोषण की पोल खोलता है।

बड़ी परिश्रम से रामदास एम.ए.एल.एल.बी की पढ़ाई करता पूरी करता है लेकिन उसके पास सिफारिश न होने के कारण उसे नौकरी नहीं मिलती। विश्वविद्यालय में प्रोफेसर सिन्हा द्वारा उसकी प्रतिभा का केवल फायदा उठाया जाता है। विश्वविद्यालय की भरती प्रक्रिया में भी उसकी प्रतिभा के बावजूद उसे नकारा जाता है। उसकी जगह अयोग्य उम्मीदवार का चयन केवल इसलिए होता है कि वह किसी बड़े आदमी का दामाद है। इसपर गुस्सा जताते हुए मिस्टर भट्टाचार्य कहते हैं, ''इट एज ए शेम। यूनिवर्सिटी में जहाँ प्रतिभावान विद्यार्थियों को आगे बढाना चाहिए, वहाँ इस तरह की बेईमानी, इस तरह एक्सप्लायट करना–दिस इल डिस्ग्रेसफुल।''[६] मिस्टर भट्टाचार्य का यह गुस्सा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में पनप रहे भाई-भतीजावाद का ही द्योतक है। रामदास अपनी वित्तीय जरूरतों के लिए अपनी प्रतिभा को बेचता है। वह कई दैनिकों में संपादकीय लेख लिखता है लेकिन उनक शोधालेख को उसका नाम नहीं बल्कि पत्रिका के मालिका नाम आता है। वह एक शैक्षिक संस्था में कॉन्ट्रॅक्ट बेस पर काम करता है। वहाँ उसे प्रतिमाह ८० रुपए के वेतन पर हस्ताक्षर लिये जाते हैं और हाथ में केवल ६० रुपए थमाए जाते हैं। अप्रैल और मई में उसे काम से निकाला जाता है और वापस जून को लिया जाता है ताकि उसे दो महीनों का वेतन देना न पड़े। इतनी संघर्षऔर जद्दोजहद करके शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद भी उसकी प्रतिभा को न्याय नहीं मिलता। तब वह विवश होकर गांव लौट आता है और एक स्कूल में मास्टर बन जाता है। विडंबना तो यह है कि जो दोस्त अक्सर पढाई में कमजोर था वह अलि के सिफारिश से उसे स्कूल में नौकरी मिलती है। भारतीय शिक्षा क्षेत्र में आई यह गिरावट आज उतनी ही प्रासंगिक है।

**निष्कर्ष:**

अतः स्पष्ट है कि 'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास में रामदास के जीवन संघर्ष के साथ शिक्षा क्षेत्र की तमाम विसंगतियों पर लेखक श्रीलाल शुक्ल ने पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। आज गाँव के न जाने के कितने ही किसान के बच्चों को प्रतिभा होने के बावजूद शिक्षा क्षेत्र में जड़े जमाए पूँजीवादी ताकतों के शोषण का शिकार बनाना पड़ा है। प्रस्तुत उपन्यास में गाँव में स्कूलों की खस्ता हालाता, कर्ज में दबे किसानों के घर में शिक्षा का अभाव, गरीब बच्चों का शिक्षा पाने का संघर्ष, शिक्षा क्षेत्र में राजनीति का बोलबाला, विश्वविद्यालयीन शिक्षा में अवसरवादिता, सिफारिशबाजी, भरती में धांधलियाँ आदि विभिन्न बिंदुओं पर रोशनी डाली गई है। फिर भी रामदास जैसे प्रतिभाशाली

युवक हार न मानकर मास्टर की नौकरी स्वीकारते हैं और 'सूनी घाटी का सूरज' बनते हैं, यह इस उपन्यास की सफलता है।

**संदर्भ सूची :-**


१. श्रीलाल शुक्ल, 'सूनी घाटी का सूरज', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. १९८७, पृ.सं. २५
२. विनोबा भावे, 'जीवन और शिक्षा' (निबंध), 'साहित्य जगत', शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, प्र.सं.२०१८ पृ.२३
३. श्रीलाल शुक्ल, 'सूनी घाटी का सूरज', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. १९८७, पृ.सं. ३९
४. वही, पृ.
५. वही, पृ. १०७
६. वही, पृ. १२२